

માનવ શક્તિ જ્ઞાન

શારદા અક્ષર જ્ઞાન



કળ-૩

ભાગ-૨

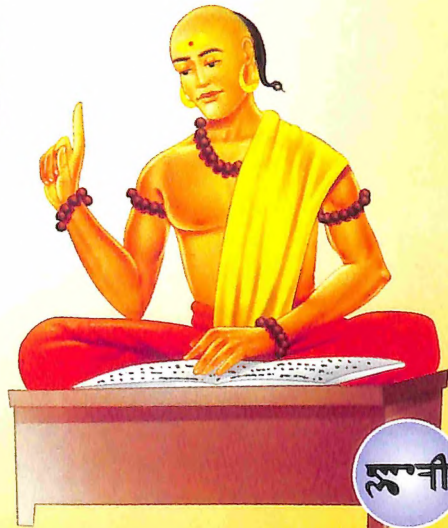




मातृका अक्षर ज्ञान

शारदा अक्षर ज्ञान

भाग-2





प्रकाशक

पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान
अजीत कालोनी, जम्मू

Contact No. : 0191-2555607, 09419133233

E-mail : punchang.vijayshwar@yahoo.com

पुस्तक का नाम : शारदा अक्षर ज्ञान, भाग-दो

संकलन एवं सम्पादन : पं० ओंकार नाथ शास्त्री

प्रकाशक : पं० प्रेम नाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

प्रतियां : 1000

दूसरा संस्करण : सन् 2016

मूल्य : ₹ 100/-



पुस्तक मिलने का पता

1 पं० प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान, अजीत कालोनी, जम्मू-180002

2 विजयेश्वर पंचांग कार्यालय, अजीत कालोनी, तालाब तिल्लो एवं चिनौर, जम्मू

अनुक्रम

आशीर्वचन	जगद्गुरु श्री शंकराचार्य स्वामीगल श्रीमतम् संस्थानम्, न0-1 सालिय स्ट्रीट, कांचीपुरम्-631502	5
शुभाशंसा	कीर्तिकान्तः शर्मा, वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल साङ्गवेद विद्यालयः, 46, संगम विहार, नजफगढ़, नई दिल्ली-43	6
दो शब्द	पं0 ओंकार नाथ शास्त्री	7
उपोद्घात	डा0 महाराजकृष्ण भरत, सहायक प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय, अखनूर, जम्मू-कश्मीर	9
Sharda Script	Shri O. N. Kaul (KAS Retd.) Hon. General Secretary J&K Historical & Cultural Research, 312, Sector 9, Roop Nagar, Jammu Tawi	15
शारदा देश की कलाकृति		17
शारदा तीर्थ के भग्नावेशेष		18
शारदा अक्षर ज्ञान भाग-1		
शारदा स्वर तथा व्यंजन (कश्मीरी भाषा में पढने की विधि)		19
स्वर		22
व्यंजन		23
शारदा अक्षर ज्ञान		24
बाराखड़ी भाग-2		36
व्यंजनों का मेल		43
मात्राओं का व्यंजनों के साथ प्रयोग (पाठ एक से तेरह तक)		44

☎ 044-27222115
Acts 044-27224236
Fax 044-27224305

JAGADGURU SRI SANKARACHARYA SWAMIGAL
Srimatam Samsthanam

Message



Blessings of His Holiness is conveyed to Shri Omkarnath Shastriji and to all those who have contributed to this work.

Sri Kanchi Kamakoti Peetam,
Prachin Swamikal Smitam.

~~RECEIVED~~
~~Srikaryam & Agent~~



वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल साङ्गवेद विद्यालयः

(वैदिकसमाज [पञ्जीः] द्वारा सञ्चालित तथा महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रीयवेदविद्याप्रतिष्ठान, उज्जैन से सम्बद्ध)

४६, संगमविहार, नजफगढ़, नई दिल्ली-४३, दूर- ९८६८५८९९७६, ९९१०७७१०७१

दिनाङ्कः- २२-१०-२०१४

संस्थापकः-

स्व०प० प्रमदत्त शास्त्री

संरक्षकः-

डॉ० रामकान्त शुक्ल

श्री जगदीश पालीवाल

अध्यक्षः-

प० श्रीदिनेशचन्द्रचतुर्वेदी

उपाध्यक्षः-

डॉ० प्रेमकुमार शर्मा

प० अम्याप्रसादपालीवाल

कोषाध्यक्षः-

प० विद्याप्रसाद मिश्र

महासचिवः-

डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा

सचिवः-

आचार्य रामावतार शर्मा

सदस्याः-

डॉ० जगदीश मुद्गल

डॉ० दिनाकरदत्त शर्मा

श्री प्रप्रेन्द्रमोहनपालीवाल

डॉ० अनिल मुद्गल

श्रीमती देवरानी शर्मा

श्री रामरूपपाल शास्त्री

श्री राजकुमार शर्मा

श्री वैभव मिश्र

शुभावांसा

वस्तुतः भगवति शारदा कश्मीरमण्डलस्य मुख्याऽऽराध्या । कश्मीरदेशस्य लिपिरपि शारदा भगवत्याः शारदायाः प्रतिमूर्तिरिवास्ति । यवनैराकान्तेऽस्मिन्मण्डले शारदालिपिविज्ञाः दुर्लभाः दृश्यन्ते । महद्दुर्षस्य विषयोऽयं यच्छ्रीमन्त ओङ्कारनाथशास्त्रिवर्याः महता प्रयासेन शारदालिपेः प्राथमिकं (Primer) पुस्तकं प्रकाशितवन्तः । तन्मयाऽवलोकितम् । पुनश्च सम्प्रति शारदालिपेः द्वितीयं पुस्तकमपि प्राकाश्यं नीयत इति श्रुत्वा मोमुद्यते मे मनः । यत्र ककाराद्यक्षराणां द्वादशमात्रात्मिकाः वर्णाः (बारहखडी), सर्वाणि संयुक्ताक्षराणि शब्दानां च सम्यगक्षरयोजना समवबोधिताः । एतत्पुस्तकं शारदाजिज्ञासूनां महत्कल्याणाय भवितेति मे विश्वासः । एतदर्थं श्रीओङ्कारनाथशास्त्रिणः साधुवादाहार्स्तथा परमपितापरमेश्वरः सपरिकरेभ्यस्तेभ्यः सुसामर्थ्यन्दयादिति प्रार्थयते ।

शुभमङ्गलकामः-

गौडवंशोद्भवो मिश्रोपाहः

कीर्तिकान्तः

(कीर्तिकान्तः शर्मा)

सहायकाचार्यः, कलानिधि विभाग, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली-११०००१। दूरभाषः- ०११-२३३८८०६९, ०९८६८५८९९७६



दो शब्द

हिमालय की कोक्ष में कश्यप ऋषि के द्वारा बसाया गया कश्मीर प्रदेश ऋषि, मुनियों की तपोभूमि रहा है। यह देव, गन्धर्व, यक्ष तथा किन्नरों का लीला स्थल रहा है, इसी कारण इस को भूतल स्वर्ग कहा गया है। कश्मीर प्राचीन काल से पूरे विश्व में प्राकृतिक, साहित्यिक, धार्मिक, संस्कृत, ज्योतिष, कर्म काण्ड तथा इतिहास का केन्द्र रहा है।

कश्मीर को शारदा देश भी कहा जाता है। मां शारदा, कश्मीर की प्रधान देवी है, शारदा कश्मीर के पश्चिम में स्थित हिन्दुओं का प्राचीनतम तीर्थों में से एक है। शारदा तीर्थ श्रीनगर से 130 कि०मी० की दूरी पर स्थित है, जो आज कल पाक अधिकृत कश्मीर में है। यह स्थल शारदा अध्ययन का केन्द्र था। शारदा लिपि कश्मीर की प्राचीन संस्कृति तथा सभ्यता का चिह्न है। यह लिपि हमारे पूर्वजों ने बहुत प्रयत्न से बनाई है। इस का जन्म मूलतः ब्राह्मी लिपि से हुआ है, गुरुमुखी भी शारदा लिपि का रूपान्तर है। कश्मीर के प्राचीन शैव, तान्त्रिक, ऐतिहासिक, ज्योतिष, षट्दर्शन शिवमत एवं धर्मशास्त्र संबंधित सभी ग्रन्थ इस शारदा लिपि में लिखे गये थे। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जोणराज ने अपना इतिहास शारदा लिपि में ही लिखा था, पाणिनी का विश्व प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ शारदा लिपि में लिखा गया था। कल्हण की राजतरंगिणी भी शारदा लिपि में लिखी गई थी। परन्तु समय की भीषण चपेटों तथा क्रूर शासकों के कारण यह अमूल्य भण्डार ध्वस्त हो गया। इस प्रकार हम कश्मीर के प्राचीन समय के इतिहास के प्रामाणिक तथ्यों से वंचित हो गये।

इस शारदा लिपि के पुनरुद्धार के लिये पं० प्रेम नाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान ने 2012 में “शारदा अक्षर ज्ञान भाग-एक” वर्णमाला पुस्तक का प्रकाशन किया। जिस का विमोचन जम्मू कश्मीर के राज्यपाल श्री एन०एन० वोहरा के कर कमलों द्वारा हुआ। माता ज्येष्ठादेवी (श्रीनगर) के प्रांगण में इस भव्य समारोह का आयोजन हुआ था। इसी शुभ कार्य को आगे बढ़ाते हुए जब शारदा अक्षर ज्ञान भाग-2 का कार्य चल रहा था तो शारदा लिपि का फाण्ड कम्प्यूटर में देखा गया परन्तु देखने में आया कि कम्प्यूटर के फाण्ड में बहुत सी त्रुटियाँ हैं जिस कारण भाग-2 के प्रकाशन में विलम्ब हुआ फिर शोध संस्थान ने प्राचीन हस्त मुद्रित बहुत सी पत्रिकाओं, ग्रन्थों तथा विशेषतौर से हमारे पूर्वजों द्वारा शारदा लिपि में छपे हुई 70 वर्षों के विजयेश्वर पंचांग की प्रतियों का पूरा अध्ययन करके शारदा अक्षर ज्ञान भाग-2 को अन्तिम रूप दिया गया। यहां इस बात का उल्लेख करना परमावश्यक है कि हमारे समाज के प्रबुद्ध विद्वान एवं हिंदी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक डा. महाराजकृष्ण भरत पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान की योजनाओं से जुड़े रहे हैं और इन सांस्कृतिक अनुष्ठानों में अपनी सेवाएं अर्पित करना वह अपना कर्तव्य समझते हैं। शारदा अक्षर ज्ञान भाग-1 और सह प्रकाशित भाग-2 के सम्पादन में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है, जिसके लिए वह निसंदेह साधुवाद के पात्र हैं। शोध संस्थान ‘शारदा अक्षर ज्ञान भाग-2’ प्रकाशित करने जा रहा है। आशा है इस शुभ कार्य में आप सभी

अपना सहयोग देंगे तथा अपने पूर्वजों की इस धरोहर को अगली पीढ़ी तक सुरक्षित पहुंचाने में योगदान देकर अपने बच्चों को इस भाषा की ओर प्रेरित करेंगे और खुद भी पढ़ेंगे।

शारदा लेखन विधि:

पहले पहल शारदा लिपि ईरानी कलमों अथवा तराशी हुई निबों से लिखी जाती थी, इस के लिखने के लिये बाजार में भिन्न-भिन्न प्रकार की तराशी हुई निबें मिलती थी जिस से किताबत करने वाले 'शारदा' लिखते थे। जिस से शारदा लिपि की वास्तविकता तथा सुन्दरता सुरक्षित रहती थी। आज कल हम पेंसिलों तथा ल्यड प्यनों से शारदा लिखते हैं जिस के फल स्वरूप शारदा लिपि की वास्तविकता तथा सुन्दरता समाप्त होती रही। इसी कारण शारदा लिपि के स्वरों तथा व्यंजनों में किसी किसी स्थान पर कुछ अन्तर देखने में आता है। मूलतः वह हमारे लिखने के कारण ही दिखाई देता है।

नोट:

शारदा अक्षर ज्ञान भाग-1 में कुछ त्रुटियां देखने में आईं जिन को भाग-2 में शुद्ध करने का पूरा प्रयास किया गया है।

जैसे :

देवनागरी

उ

ड़

ण

शारदा

उ

रू

न

देवनागरी मात्राएं

ए

ऐ

औ

उ

ऊ

शारदा मात्राएं

—

==

~

०

७

जिंकन नथ मभी

(ओंकार नाथ शास्त्री)

दिनांक : 7 मार्च 2016

09419133233



उपोद्घात

‘शारदा अक्षर ज्ञान’ भाग-एक सचित्र वर्णमाला पुस्तक के प्रकाश में आने के साथ ही पं. प्रेमनाथ शारत्री सांस्कृतिक शोध संस्थान ने यह दृढ़ संकल्प लिया था कि इस पुस्तक का दूसरा भाग योजनाबद्ध रूप से यथासमय प्रकाशित होगा। जहां कथनी और करनी अभेद हो जाती है, वहां कर्म का सुफल बहुजनहिताय हो जाता है। ‘शारदा अक्षर ज्ञान (भाग दो)’ के प्रकाश में आने से जहां सांस्कृतिक शोध संस्थान ने अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है, वहीं प्राचीन शारदा लिपि के उत्थान हेतु बरसों से अवरुद्ध पड़ी सांस्कृतिक धारा को प्रवाहित होने का सुअवसर मिला है। शारदा लिपि के जिज्ञासु पाठक और नव-आगंतुक अपनी ज्ञान पिपासा को शांत कर पाएंगे, ऐसी आशा की जानी स्वाभाविक ही है।

सन् 2012 में प्रकाशित प्रारम्भिक ‘शारदा अक्षर ज्ञान’ वर्णमाला में लिपि के इतिहास पर संक्षिप्त में प्रकाश डालते हुए कुछ ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों का भी उल्लेख किया गया है, जिनमें कल्हण पण्डित द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ ‘राजतरंगिणी’, भट्टावतार कृत ‘बाणासुर कथा’ तथा भास्कराचार्य द्वारा शारदा लिपि में लिखित चौदहवीं शती की संत कवयित्री ललद्यद के वाख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यहां बताना अप्रासंगिक न होगा कि दसवीं शताब्दी में जिस कुटिल लिपि से देवनागरी का विकास हुआ उसी लिपि से नौवीं शती में शारदा लिपि का रूप भी हमारे सामने आया है। कुटिल लिपि से पूर्व गुप्त और उससे पहले ब्राह्मी लिपि रही है। ई०पू० 500 से 350 ई० तक भारत में ब्राह्मी लिपि के साक्ष्य मिले हैं। वर्णप्रधान अक्षरात्मक ब्राह्मी लिपि ही पहले संस्कृत भाषा के लेखन का माध्यम बनीं और कालांतर में इसका स्थान शारदा ने ले लिया।

इतिहास साक्षी है कि न केवल उत्पल राज वंश (नौवीं शती), दुर्लभ वर्धन, जयापीड, रानी दिदा, अवन्तीवर्मन, महाराजा ललितादित्य मुक्तापीड, मुस्लिम शासक जैनुल-आबदीन तथा पठान शासकों (18वीं शताब्दी) तक कहीं-कहीं खंडित तथा कहीं पूर्ण रूप में स्वर्ण मुद्राओं, शिलालेखों, ताम्रपत्रों, कांस्य प्रतिमाओं, मंदिरों, राज प्रसादों तथा घोषणापत्रों में हमें इस लिपि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं वरन् नौवीं शती से भी पूर्व पहली शती में महाराजा तुज्जीन के शासनकाल में शिलालेखों पर शारदा के प्रमाण मिले हैं। ऐसे ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि शारदा लिपि दीर्घकाल तक कश्मीर की राजभाषा रही है और आम जनता भी अपनी दिनचर्या में इस का व्यवहार करती रही है।

जम्मू कश्मीर के अतिरिक्त पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पूर्व व दक्षिण भारत में भी इस लिपि का प्रचलन रहा। उत्तर दक्षिण भारत समेत विश्व के कई देशों से जो विद्यार्थी और विद्वत्तजन यहां ज्ञान की खोज में आते थे, उन्हें शारदा सीखनी पड़ती थी, क्योंकि विद्या अध्ययन का माध्यम ही यह लिपि थी। ज्ञान-विज्ञान की अनेक धाराओं का ज्ञान प्राचीन शारदा माता मंदिर में प्रतिष्ठित शारदा पीठ से अर्जित किया जाता रहा है। यहां कभी आद्य गुरु शंकराचार्य को शिव की शक्ति का बोध हुआ था। कई विदेशी विद्वानों ने भी इस पावन स्थल की महिमा का गुणगान किया है। शारदा माता के नाम से ही इसे शारदा देश भी कहा जाता रहा है। कश्मीर प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं, ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार से विश्व विख्यात था। वर्तमान परिस्थितियां हम सब के सामने हैं।

यह शारदा ही थी जिसे गुरुमुखी और टाकरी लिपियों का विकास हुआ। गुरुमुखी आज पंजाब प्रांत की प्रमुख लिपि है जिसे न केवल शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया जाता है वरन् प्रशासन में भी कामकाज की भाषा का इसे गौरव प्राप्त है। दैनिक समाचार पत्र भी इस लिपि में छपते रहते हैं। पर शारदा अपने विकास काल में छाल और भोजपत्रों पर अनमोल साहित्य देकर विलुप्त हो गई, क्योंकि इस लिपि को मुख्य धारा में लाने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी सकारात्मक प्रयास नहीं हुए। यदि इस लिपि के मुद्रण, प्रकाशन की योजनाएं प्रारम्भ हुई होतीं तो आज इस लिपि का पूर्व साहित्य और वर्तमान पक्ष भी उजागर होता। ब्राह्मी लिपि से उद्भूत बंगला, तमिल, तेलुगू आदि लिपियां आज उत्तरोत्तर विकास पा रही हैं क्योंकि इनके सीखने के माध्यम उपलब्ध रहे हैं।

सहस्र वर्षों के पुरातन इतिहास, धर्म-संस्कृति की साक्ष्य रही इस लिपि में कई अनमोल ग्रन्थों की रचना संस्कृत में हुई। मध्यकालीन कश्मीर के रक्त रंजित इतिहास के लगभग ६०० वर्षों में इस लिपि ने कई आततायी आक्रमणकारियों के प्रहार झेले, जिस कारण इस का विकास क्रम थम सा गया। अनेक हस्तलिखित पाण्डुलिपियां स्वाह हो गईं, कुछ विदेशी अपने साथ उठा कर ले गए। ताम्रपत्रों, स्वर्ण मुद्राओं पर उत्कीर्ण शारदा लिपि के साक्ष्य आक्रमणकारी क्या जाने, उन्हें तो धन दौलत की चाह थी। विश्वविख्यात विश्वविद्यालय शारदा पीठ को ऐतिहासिक मार्तण्ड मंदिर की तरह नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। शारदा पीठ के भग्नावशेष पाकिस्तान द्वारा हथियाए गए भारतीय भू भाग में अपनी विध्वंस की कथा कह रहे हैं। ऐसे में भारतीय संस्कृति की अमूल्य सम्पदा हमसे छीनी गई और आज स्वतंत्र भारत में भी हम कश्मीर की उस गौरवशाली परम्परा, इतिहास, साहित्य, त्रिक शास्त्र, तंत्र-मंत्र विद्या, दर्शन, ज्योतिष, गणित, कर्मकाण्ड जैसे अनमोल हस्तलिखित ग्रन्थों को भावी पीढ़ी तक नहीं ले जा पा रहे हैं। यह भारतीय वाङ्मय के लिए भी अपूर्णीय क्षति है, जिसे कश्मीर के प्राचीन संस्कृत आचार्यों ने समृद्ध किया था।

वर्तमान में शारदा लिपि के रूप में देश-विदेश के पुस्तकालयों/संग्रहालयों व घरों में शारदा लिपि की पाण्डुलिपियां जीर्ण-शीर्ण अवस्था या फिर कहीं अव्यवस्थित ढंग से सुरक्षित हैं, पर आज

हम उन तक पहुँचने में असमर्थ हैं, क्योंकि हमारे पास इस लिपि के ज्ञाता नगण्य ही हैं।

इस बात का उल्लेख हमने 'शारदा अक्षर ज्ञान' (भाग-एक) में भी किया है कि आज समय के थपेड़ों-झंझावातों के बीच एक अंतराल से उपेक्षा झेल रही इस लिपि को फिर से अपने गौरवमयी प्रतिष्ठित पद पर आसीन करने की अद्भुत पहल पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान ने की है। ज्योतिष शास्त्र के जाज्वल्यमान नक्षत्र, प्रकाण्ड विद्वान स्व० पण्डित प्रेम नाथ शास्त्री के सुपुत्र एवं विजयेश्वर पंचांग के पूर्व सम्पादक एवं वर्तमान में संशोधक पं. ओंकारनाथ शास्त्री ने कश्मीर की पुरातन सांस्कृतिक विरासत को संजोने का जो बीड़ा उठाया है वह प्रशंसनीय ही नहीं, प्रेरणास्पद भी है। अपने पिताश्री के नाम से गठित इस सांस्कृतिक शोध संस्थान के माध्यम से उन्होंने समाज के साथ जो तादात्म्य स्थापित किया है वह निस्संदेह प्रोत्साहित करने वाला है। विजयेश्वर पञ्चांग के माध्यम से हर घर में 'पण्डित' को स्थापित करने वाले पं. प्रेमनाथ शास्त्री का नाम लोक प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने जीवन काल में कश्मीरी पण्डितों के धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में जो अतुलनीय योगदान दिया, भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए जो कार्य किया और शारदा लिपि के पुनरुत्थान हेतु जो पहल की, उसी विरसे को पं. ओंकारनाथ शास्त्री ने अपने में आत्मसात् करते हुए नई खोज व नव-अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए अपने स्वाध्याय के बल पर ज्ञान की अजस्रधारा को प्रवाहित करने का प्रयास किया है।

'शारदा अक्षर ज्ञान (भाग-एक) के द्वारा जिस लिपि को जीवंत रखने का श्रीगणेश हो चुका है उसे भाग-दो वर्णमाला पुस्तक से विशेष बल प्रदान होगा। 'शारदा अक्षर ज्ञान' (भाग दो) को आपके हाथों में सौंपकर सांस्कृतिक शोध संस्थान के संस्थापक एवं इस अभियान में संलग्न सांस्कृतिक कर्मियों को हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह प्रथम भाग की तरह ही देवनागरी लिपि के माध्यम से शारदा तक पहुँचने का एक सतत् प्रयास है। हिन्दी की लिपि देवनागरी की तरह ही शारदा को बाएं से दाएं की ओर लिखा जाता है। दोनों लिपियां अक्षरात्मक हैं।

प्रस्तुत वर्णमाला पुस्तक की रूपरेखा बनाते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि शारदा अक्षर ज्ञान के प्रति जिज्ञासु पाठक स्वयं ही इस लिपि को लिखने तथा पढ़ने का अभ्यास प्रारम्भ कर सकें। ऐसी ही वर्णमाला की पुस्तकें शिक्षक बनकर हमें उस विस्मृत इतिहास की ओर ले जाएंगी, जहां प्राचीन पाण्डुलिपियों में संगृहीत विपुल साहित्य अपनी कथा कहने के लिए छटपटा रहा है और शब्द अपने कलेवर से बाहर आकर अर्थ पाने को आतुर हैं।

इतिहास के भिन्न-भिन्न काल खण्डों में व्यवहृत इस लिपि के गठन में अनेकरूपता का मिलना स्वाभाविक है। शारदा का प्राथमिक ज्ञान कराने के उद्देश्य से बनाई गई इस वर्णमाला पुस्तक में वर्णों की एकरूपता पर विशेष बल दिया गया है। यह हमारे लिए एक सुखद समाचार है

कि शारदा लिपि को कम्प्यूटरकृत करने के लिए इसके वर्णों के फॉण्ट तैयार हो चुके हैं, पर इस ओर अभी भी अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। हमने मूल हस्तलिखित शारदा लिपि के अक्षरों को अपनाते हुए कम्प्यूटर का भी प्रयोग किया है।

अद्यतन प्रकाशित पुस्तक में सर्वप्रथम वर्णमाला का परिचय देते हुए स्वर और व्यंजनों को सचित्र दर्शाया गया है। तदन्तर हिन्दी की 'बारहखड़ी' की तरह शारदा की मात्राओं को उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनों के साथ यथारूप मिलाकर प्रदर्शित किया गया है। इस क्रम में अनुनासिक ध्वनियों समेत संयुक्त व्यंजनों को भी स्थान दिया गया है। अंत में तेरह विशेष अभ्यास पाठों को संकलित किया गया है जिनके माध्यम से अक्षर ज्ञान पा रहे शारदा के स्वयं 'शिक्षक-विद्यार्थी' अक्षर को जोड़ने के क्रम से लेकर स्वरों की मात्राओं समेत अनुस्वार तथा विसर्ग को शब्दों तथा वाक्यों में प्रयोग करना सीख सकेंगे। यहां पर वर्णों के परिचय के अनन्तर शारदा के अंकों का परिचय भी दिया गया है। देवनागरी लिपि के अंकों से इनकी कहीं समानता नहीं दिखती।

देवनागरी लिपि और शारदा वर्णमाला के अक्षरों में जब हम साम्य और वैषम्य पर ध्यान देते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि स्वरों में यह समानता हमें केवल 'उ' 'ऊ' में मिलती है जबकि व्यंजनों में थोड़ी बहुत समानता ग, न, य, ल और व में है। मात्राओं में 'ि', 'ी' तथा अनुस्वार और विसर्ग में साम्य है। अक्षर ज्ञान करते समय शारदा के कुछ वर्णों को पूरी सावधानी के साथ आत्मसात् करने की आवश्यकता है क्योंकि कुछ वर्णों में कम ही भिन्नता है। देवनागरी और शारदा लिपि में तब भिन्नता और अधिक झलकने लगती है जब शारदा में संयुक्त अक्षरों का प्रयोग प्रारम्भ होता है। कहीं-कहीं पर शारदा के संयुक्त अक्षर कुछ भिन्न ही आकार ग्रहण करते हैं। इसी कारण शारदा लिपि के ज्ञाता रहे डा० श्रीनाथ तिवक् ने अपनी पुस्तक 'शारदा लिपि दीपिका' में आधिकारिक रूप से कहा है कि "वास्तव में संयुक्त वर्णों को पढ़ना और लिखना ही शारदा वर्णों का पूर्ण ज्ञान माना जा सकता है।" महाराजा तुंजीन का संदर्भ भी इन्हीं की पुस्तक से लिया गया है।

देवनागरी की अपेक्षा शारदा में ऋ, लृ और ॠ के अतिरिक्त स्वर भी हैं और देवनागरी की ही तरह अनुस्वार और विसर्ग भी है। इस वर्णमाला पुस्तक में लृ, ॠ का समावेश नहीं किया गया है, जबकि प्रथम भाग में इन को स्थान दिया गया है। चार संयुक्त व्यंजनों के अतिरिक्त शारदा में भी 33 व्यंजन है। इस बार शारदा वर्णमाला भाग-2 में संयुक्त व्यंजन 'श्र' (श्रृ) को भी जोड़ा गया है। 'श्र' से ही 'श्री' बनता है और इस शब्द का कश्मीर के धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में विशेष महत्व है और 'श्री' ही है जो व्यक्तियों के नामों के पूर्व भी प्रयुक्त होता है। यह सर्वविदित है कि कश्मीर श्रीविद्या का प्रमुख केंद्र रहा है।

कश्मीर में जिस ब्राह्मण वर्ग ने शारदा वर्णमाला को चिरकाल तक संरक्षित रखा, आज उसी

वर्ग ने इस थाती को प्रकाश में लाने का बीड़ा भी उठाया है। इस संदर्भ में पहले भी अल्प प्रयास होते रहे हैं। पं० प्रेमनाथ शास्त्री ने तो शारदा वर्णमाला की एक लघु पुस्तिका हमारे सामने लायी थीं। डा० श्रीनाथ तिवक् के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान युग में पं० प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान द्वारा उठाया गया ऐसा विरला कदम सम्भवतया पहला सार्वजनिक प्रयास है। आने वाले समय में ऐसे प्रयासों को जारी रखने और इस लिपि की गरिमा को बनाए रखने की आवश्यकता है। शारदा वर्णमाला के प्रकाश में आने से इसकी लोकप्रियता बढ़ी है, तभी तो इसके प्रथम भाग की प्रतियां देश की कुछ प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों ने भी मंगवाई हैं तथा कुछ प्रतियां विदेश भी पहुंची है।

शारदा का ज्ञान बच्चों को प्राथमिक स्तर पर कराने के लिए तमिलनाडु में देश के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक पीठ श्री काँची कामकोटि पीठम् नं० 1, कांची पुरम ने 'शारदा अक्षर ज्ञान' भाग-प्रथम को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। इसे सांस्कृतिक शोध संस्थान की प्रथम उपलब्धि माना जाएगा। देश के विख्यात विश्वविद्यालय जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने भी भाग-प्रथम की पुस्तकें मंगवा कर इस लिपि के उत्थान में अपनी रुचि प्रदर्शित की है। कालांतर में ऐसे प्रोत्साहन और मिलने की आशा है जिन के द्वारा शारदा लिपि का उत्तरोत्तर विकास होगा।

इस बात का उल्लेख करना नितांत आवश्यक होगा कि जो व्यवसायिक कर्मी इस शारदा वर्णमाला को पुस्तकाकार देने का कार्य कर रहे हैं वह निस्संदेह साधुवाद के पात्र हैं। प्रस्तुत वर्णमाला पुस्तक तैयार करने में जो कठिनाइयां आयीं होंगी उससे इनकार नहीं किया जा सकता। शारदा के अक्षर संयोजन में जो प्रयास हुए हैं, वह प्रशंसनीय है।

मैं विशेषरूप से पं० प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान के संस्थापक और यज्ञों की अखण्ड श्रृंखला से समाज की एकता को बढ़ाने वाले धर्म प्रणेता पं० ओंकार नाथ शास्त्री का आभार व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने मुझे अपनी जड़ों की ओर लौटने के इस मंगलकार्य के साथ जोड़े रखा और संपादन में सेवाएं अर्पित करने की प्रेरणा दी।

शारदा वर्णमाला की प्रासंगिकता तब और बढ़ेगी, जब हम इस अक्षर ज्ञान से अतीत में झांक कर प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को पढ़ने की ओर अग्रसर होंगे और भावी पीढ़ी को भी उस धरोहर से साक्षात्कार करा पाएंगे - जिसे हम भी बरसों से वंचित रहे। यह तभी सम्भव होगा जब हम शारदा वर्णमाला के पुरातन कलेवर को बनाए रखते हुए उसे युगानुरूप कंप्यूटरीकृत प्रणाली से मेल कराने का प्रयास करेंगे, तभी हम शारदा लिपि की पुस्तकों को प्रकाशित करने में और समर्थ होंगे।

आइए संकल्प करें कि हम इस लिपि के अक्षर ज्ञान का अभ्यास स्वयं करेंगे और अपने परिचितों-अपरिचितों तक भी इस महाअभियान को ले जाने का प्रयास करेंगे। इतिहास की

भूल-भुलैयाँ में कल तक भटक रही इस लिपि के अक्षरों को फिर से अपना मान-सम्मान मिलें, ऐसी हम मां शारदा से प्रार्थना करते हैं जिनके नाम से इस लिपि के इतिहास का श्रीगणेश भी होता है। इस आयोजन की गरिमा तब और बढ़ेगी, जब विद्वतजन हमें अपने सुझावों एवं संशोधनों से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

पुं(उ.) भगवत् कृष्ण कृत

प्रो० (डा०) महाराजकृष्ण भरत

दिनांक - 19 जनवरी, 2016

हिन्दी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय अखनूर
जम्मू कश्मीर

श्री गणेशाय नमः



SHARDA SCRIPT

Sharda is the oldest script used in Kashmiri Language and in ancient times Kashmir too was called Sharda Desh because of the sacred Shrine of Mother Goddess Sharda situated at the confluence of river Krishan Ganga and Madumati in the Village Shardi currently in occupied Kashmir by Pakistan. The Goddess in the temple is worshipped as embodiment of total energy that sustains the universe and as such is also worshiped as the goddess of knowledge or Saraswati as well. The temple was most famous in whole of India and as such Adi Guru Shankaracharya visited the Shrine in 788-810 A.D. The place was also a noted centre for learning Hindu Scriptures. The famous Vedic philosopher Swami Ramanuj Acharya came to the shrine in the 12th Century A.D. Muslim scholars like Abul Fazal and Albruni as well came to the Shrine. The great Antiquary, Mark Ami Stein visited the Shrine in September 1892, Sharda script excelled upto 10th and 11th Century A.D. and came up to the mark of the cultural magnificence of the times. It was followed by Sanskrit script but Sharda script continued as the basic script and the Kashmiri Pandits till this day are using the script in the preparations of Horoscopes. The basic progress in the knowledge in the land of "mother goddess of learning went on touching the new spiritual height. In the first Century A.D. under the patriarchship of a Shivate and Bodhi Scholar of Kashmir Nagarjuna who gave out to the world Mahayana Buddhism while Kashmiri Trika Shavism continued to make the lives of people peaceful and well meaning. Mahayana Buddhism went from Kashmir to Central Asia, Malaysia and further to Japan. Kashmiri Trika Shavism which is Shiva Shakti worship spread from the Himalayan heights to extreme South and making Indian people as one entity. This all came from Sharda Desha or Kashmir and started from Sharda Script.

But unfortunately this backbone script of Kashmir is presently almost dying although Sharda Manuscripts are available in all the major research libraries. Jammu Rughnath Mandir Library established by Dogra Maharaja Ranbir Singh has collected a good number of Sharda manuscripts of rarity. These treasures could help in consolidating the Sharda script. No doubt Muslim fanatic rulers of Kashmir have destroyed most of the Sharda and Sanskrit manuscripts but yet whatever is left behind in the research libraries and in position of exiled Kashmiri Hindus, a good start can be made if some dedicated efforts are made in the name of fostering Indian tradition culture in general and of Kashmiri Pandits in particular, who in spite of all sorts of pain, torture and annihilation inflicted on them, always tried to preserve the

inherited material to preserve culture and they left every thing when they were forced to leave Kashmir but only carried with them the Sharda manuscripts.

In this connection efforts of Shri Omkar Nath Shastri who represents the traditional Kashmiri Hindu Religious Organisation and issues yearly Kashmiri Religious Calender established over six hundred years before at Bijbehara Kashmir, which in spite of other facilities is upholding traditional cultural character of Kashmiri Hindus thrown out of Kashmir in 1989, is worthy to be praised and help extended to him in reviving the forgotten Sharda script which is an rare inheritance of India.

O.N. KAUL

(KAS Retd.

Hon. General Secretary J&K Historical
& Cultural Research,
312, Sector 9, Roop Nagar, Jammu Tawi)

शारदा देश की कलाकृति हस्त मुद्रित नव ग्रह



शारदा तीर्थ के भग्नावशेष



पाकिस्तान द्वारा हथियाए गए भारतीय भूभाग में अपनी विध्वंस की कथा कहते हुये शारदा तीर्थ।

शारदा स्वर तथा व्यंजन

शारदा अक्षर	देवनागरी अक्षर	कश्मीरी भाषा में पढ़ने की विधि	अंग्रेजी में पढ़ने की विधि	स्वर
अ	अ	आदव् अ	ādaυ a	a
आ	आ	आतव आ	aitav ā	ā
इ	इ	इयव इ	yēyēv yi i	i
ई	ई	ईश्वरव ई	yisherav yi ī	ī
उ	उ	उपल उ	wopal vo u	u
ऊ	ऊ	उपलबा ऊ	wopal bā ū	ū
ऋ	ऋ	रिनव् ऋ	renav ṛ	ṛ
ॠ	ॠ	रूखव ॠ	rakhav ṝ	ṝ
लृ	लृ	लियव (लृ	leyav !	!
ली	ली	लीसव लृ	lisav !̄	!̄
ए	ए	क्रालव ए	kralary e	e
ऐ	ऐ	क्राली ऐ	kralia ai	ai
ओ	ओ	उठो ओ	watho o	o
औ	औ	औषधी औ	ashidi au	au
अं	अं	मसफ्युर अं	masphyor	.
अः	अः	जह फ्युर अः	do pheri	:
क	क	कोव क	kov ka	ka
ख	ख	खऽन्य ख	khān kha	kha
ग	ग	गगर ग	gagar ga	ga
घ	घ	घऽस घ	gāsi gha	gha
ङ	ङ	नारुग ङ	nārug ṇa	ṇa
च	च	चाटुव च	Tsāṭav ca	ca
छ	छ	छटिन्य छ	Tshvatin cha	cha
ज	ज	जऽय ज	Zayi Za	Za
झ	झ	झाशयन्य झ	Zāshin jha	jha
ञ	ञ	खुनफुट ज	Khvan phuṭi ñ	ñ

शारदा स्वर तथा व्यंजन

शारदा अक्षर	देवनागरी अक्षर	कश्मीरी भाषा में पढ़ने की विधि	अंग्रेजी में पढ़ने की विधि	स्वर
ट	ट	अरमाण् ट	Armān ṭa	ṭa
ठ	ठ	सुरमाण् ठ	Sarmān ṭha	ṭha
ड	ड	डुह ड	ḍak dha	dha
ढ	ढ	ढक् ढ	ḍak dha	dha
ण	ण	नानगुरि ण	nānguri ṇa	ṇa
त	त	तोव् त	tav ta	ta
थ	थ	थँज्य थ	thāji tha	tha
द	द	ददुव् द	dadav da	da
ध	ध	धून्य ध	dūn dha	dha
न	न	नस्तू न	nastav na	na
प	प	पडुर प	paḍāri pa	pa
फ	फ	फरिन्य फ	phāriñ pha	pha
ब	ब	बुह ब	bub ba	ba
भ	भ	भाज्य भ	bāyi bha	bha
म	म	मोज्य म	mov ma	ma
य	य	याव य	yāv ya	ya
र	र	रकह र	raka ra	ra
ल	ल	लाव ल	lāv la	la
व	व	वशि व	vash va	va
श	श	शकर श	shakar śa	śa
ष	ष	फँरि ष	phāri ṣa	ṣa
स	स	सुह स	sus sa	sa
ह	ह	हालव ह	hālv ha	ha
क्ष	क्ष	खुल व्युद् क्ष		
त्र	त्र	त्रुकत्रोव त्र		
ज्ञ	ज्ञ	जीय ज़हस तल ख्वन फुटिज		

हलन्त (्) (।) का प्रयोग

देवनागरी	शारदा	देवनागरी	शारदा
ज्+य = ज्य	ए।+य = ऎ	क्+त = क्त	क।+उ = ऊ
ख्+य = ख्य	प्।+य = षु	त्+र = त्र	उ।+र = रु
ग्+य = ग्य	ण।+य = णु	ज्+ज = ज्ञ	ए।+ल = लु
त्+न = त्त	उ।+न = नु	श्+व = श्व	म।+र = म्र
त्+म = त्तम	उ।+भ = भु	श+र = श्र	म।+व = म्व
त्+य = त्त्य	उ।+य = यु	न्+द = न्द	न।+म = न्म
न्+त = न्त	न।+उ = नु	र्+ब = र्व	ग।+च = गु
न्+द = न्द	न।+म = न्म	न्+ध = न्ध	न।+ण = नु
न्+य = न्य	न।+य = नु	संयुक्त वर्ण	
ब्+द = ब्द	च।+म = च्म		
ब्+य = ब्य	च।+य = चु	क्क	क
क्+य = क्य	क।+य = कु	क्र	कृ
द्+य = द्य	म।+य = मु	क्न	कन
ङ्+क = कं	ए।+क = क	क्व	कव
र्+ज = र्ज	ग।+ए = ग्ल	क्म	कम
र्+द = र्द	ग।+म = ग्म	क्य	कृ
क्+र = क्र	क।+र = कृ	क्ल	कृल
ग्+र = ग्र	ण।+र = ग्र	क्त	कृत्
प्+र = प्र	भ।+र = भ्र	क्स	कृस्
ब्+र = ब्र	च।+र = च्र	क्च	कृच
		क्य	कृय
		क्त्र	कृत्

भूग स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
 ए ऐ ओ औ अं अः।

शारदा स्वर

अ
 आ
 इ
 ई
 उ
 ऊ
 ऋ
 ॠ
 ए
 ऐ
 ओ
 औ
 अं
 अः

हिंदी स्वर

अ
 आ
 इ
 ई
 उ
 ऊ
 ऋ
 ॠ
 ए
 ऐ
 ओ
 औ
 अं
 अः

शारदा मात्राएं

।
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥

हिंदी मात्राएं

।
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥

ह्रस्व व्यंजन

क ण ग ण ए
क ख ग घ ङ

च क ए ऋ ऌ
च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण
ट ठ ड ढ ण

उ ष ऋ ऌ न
त थ द ध न

प ढ च ङ म
प फ ब भ म

य र ल व
य र ल व

म ष भ ङ
श ष स ह

क्व इ ऋ म्
क्ष त्र ज्ञ श्र

ਸ਼

ਸ਼ਨਾਰ



ਅ

ਅਨਾਰ

ਸ਼ੁ

ਸ਼ੁਭ

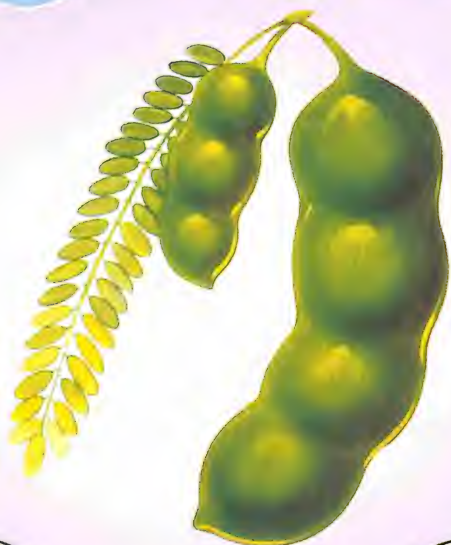


ਆ

ਆਮ

ੳ

ੳਭਲੀ



ੲ

ੲਮਲੀ

ੳੰ

ੳੰਧ



ੲੰ

ੲੰਘ

ਤ

ਤਲ੍ਹ

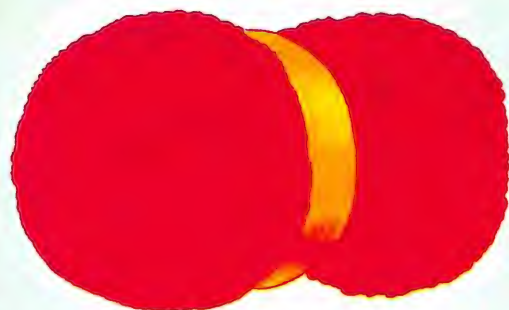


ਤ

ਤਲ੍ਹ

ਤ

ਤ



ਤ

ਤ

ਟ

ਧਿ



ਫ਼

ਫ਼ਿ

ਫ਼

ਫ਼ੀ



ਐ

ਐਡੀ

ऐ

ऐनक



ऐ

ऐनक

ओ

ओखली



ओ

ओखली

औ

औरत



औ

औरत

अं

अंगूर



अं

अंगूर

क

कमल



क

कमल

ख

खरगोश



ख

खरगोश

ग

गमला



ग

गमला

घ

घड़ी



घ

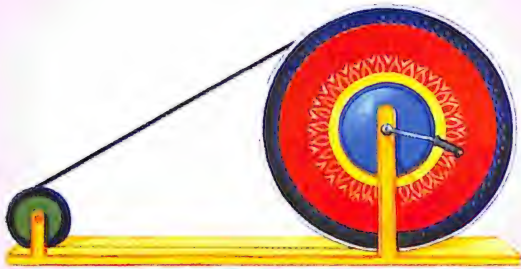
घड़ी

र

ड

म

मगाप



च

चर्खा

क

कडरी



छ

छतरी

र

रफरफ



ज

जहाज़

र

झुंड



झ

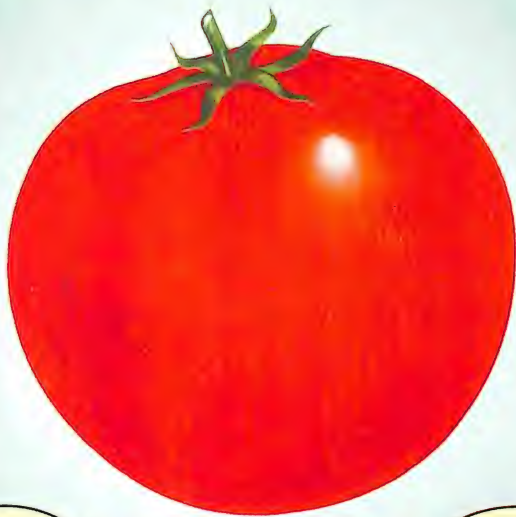
झण्डा

ल

अ

ੲ

ਟਮਾਟਰ



ਟ

ਟਮਾਟਰ

ਠ

ਠੇਰਾ



ਠ

ਠੇਰਾ

ਤ

ਤਮਗੁ



ਤ

ਤਮਗੁ

ਰ

ਰੋਟੀ



ਰ

ਰੋਟੀ



उ

उग्बुर



त

तरबूज

ष

षरभभ



थ

थरमस

द

दशानन

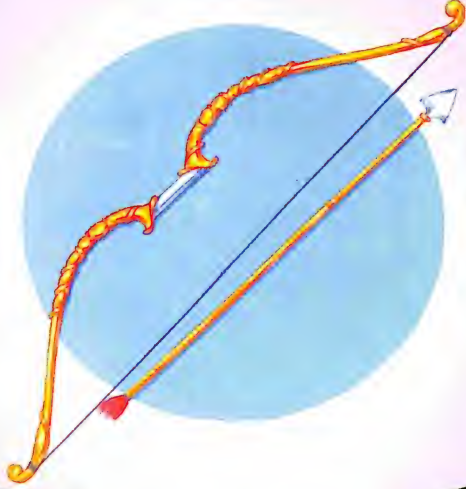


द

दशानन

उ

धनुष



ध

धनुष

न

नल



न

नल

प

पतंग



प

पतंग

फ

फल



फ

फल

च

चडाप



ब

बतख

ठ

ठवन



भ

भवन

भ

भछली



म

मछली

य

यज्ञ



य

यज्ञ

र

रथ



र

रथ

ल

लट्ठ



ल

लट्ठू

व

वक्



व

वक्

म

मलगभ



श

शलगम

प

षट्कोण



ष

षट्कोण

भ

भपेरा



स

सपेरा

ह

हाथी



ह

हाथी

क्र

क्रात्रिय



क्ष

क्षात्रिय

इ

हिमाल



त्र

त्रिशूल

अ

ज्ञानी



ज्ञ

ज्ञानी

म्

म्रीढल



श्र

श्रीफल

बारहखड़ी

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
क	क	ख	ख	ग	ग	घ	घ	ङ	ङ
क	का	ख	खा	ग	गा	घ	घा	ङ	ङा
कि	कि	खि	खि	गि	गि	घि	घि	ङि	ङि
की	की	खी	खी	गी	गी	घी	घी	ङी	ङी
कु	कु	खु	खु	गु	गु	घु	घु	ङु	ङु
कू	कू	खू	खू	गू	गू	घू	घू	ङू	ङू
के	के	खे	खे	गे	गे	घे	घे	ङे	ङे
कै	कै	खै	खै	गै	गै	घै	घै	ङै	ङै
को	को	खो	खो	गो	गो	घो	घो	ङो	ङो
कौ	कौ	खौ	खौ	गौ	गौ	घौ	घौ	ङौ	ङौ
कं	कं	खं	खं	गं	गं	घं	घं	ङं	ङं
कः	कः	खः	खः	गः	गः	घः	घः	ङः	ङः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

म	च	क	छ	र	ज	ग	झ	ल	ञ
म	चा	क	छा	र	जा	ग	झा	ल	जा
मि	चि	कि	छि	रि	जि	गि	झि	लि	जि
मी	ची	की	छी	री	जी	गी	झी	ली	जी
म	चु	क	छु	र	जु	ग	झु	लु	जु
म्र	चू	कृ	छू	रु	जू	गृ	झू	लृ	जू
मे	चे	के	छे	रे	जे	गे	झे	ले	जे
मै	चै	कै	छै	रै	जै	गै	झै	लै	जै
मै	चो	को	छो	रो	जो	गो	झो	लो	जो
मौ	चौ	कौ	छौ	रौ	जौ	गौ	झौ	लौ	जौ
मं	चं	कं	छं	रं	जं	गं	झं	लं	जं
मः	चः	कः	छः	रः	जः	गः	झः	लः	जः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
ए	ट	०	ठ	उ	ड	ऋ	ढ	ॡ	ण
ए	टा	०	ठा	उ	डा	ऋ	ढा	ॡ	णा
ऐ	टि	ि	ठि	उि	डि	ऋि	ढि	ॡि	णि
ई	टी	ी	ठी	उी	डी	ऋी	ढी	ॡी	णी
ऋ	टु	३	ठु	उ३	डु	ऋ३	ढु	ॡ३	णु
ॠ	टू	ॡ	ठू	उॡ	डू	ऋॡ	ढू	ॡॡ	णू
ऌ	टे	०	ठे	उ०	डे	ऋ०	ढे	ॡ०	णे
ॡ	टै	०	ठै	उॡ	डै	ऋॡ	ढै	ॡॡ	णै
ऋ	टो	०	ठो	उ०	डो	ऋ०	ढो	ॡ०	णो
ॠ	टौ	०	ठौ	उॠ	डौ	ऋॠ	ढौ	ॡॠ	णौ
ऌ	टं	०	ठं	उं	डं	ऋं	ढं	ॡं	णं
एः	टः	०ः	ठः	उः	डः	ऋः	ढः	ॡः	णः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
उ	त	ष	थ	ऋ	द	ण	ध	न	न
ऊ	ता	षा	था	ॠ	दा	ॡ	धा	ना	ना
उि	ति	षि	थि	मि	दि	णि	धि	नि	नि
उी	ती	षी	थी	मी	दी	णी	धी	नी	नी
उु	तु	षु	थु	मु	दु	पु	धु	नु	नु
उ्र	तू	पु	थू	म्र	दू	प्र	धू	न्र	नू
उे	ते	षे	थे	मे	दे	णे	धे	ने	ने
उै	तै	षै	थै	मै	दै	पै	धै	नै	नै
उो	तो	षो	थो	मो	दो	पो	धो	नो	नो
उौ	तौ	षौ	थौ	मौ	दौ	पौ	धौ	नौ	नौ
उं	तं	षं	थं	मं	दं	पं	धं	नं	नं
उः	तः	षः	थः	ऋः	दः	णः	धः	नः	नः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

५	प	ठ	फ	च	ब	ठ	भ	भ	म
५	पा	ठा	फा	चा	बा	ठा	भा	भ	मा
पि	पि	ठि	फि	चि	बि	ठि	भि	भि	मि
भी	पी	ठी	फी	ची	बी	ठी	भी	भी	मी
५	पु	ठु	फु	चु	बु	ठु	भु	भु	मु
५	पू	ठू	फू	चू	बू	ठू	भू	भू	मू
५	पे	ठे	फे	चे	बे	ठे	भे	भे	मे
५	पै	ठै	फै	चै	बै	ठै	भै	भै	मै
५	पो	ठो	फो	चो	बो	ठो	भो	भो	मो
५	पौ	ठौ	फौ	चौ	बौ	ठौ	भौ	भौ	मौ
५	पं	ठं	फं	चं	बं	ठं	भं	भं	मं
५:	प:	ठ:	फ:	च:	ब:	ठ:	भ:	भ:	म:

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
य	य	र	र	ल	ल	व	व	म	श	ध	ष
य	या	र	रा	ल	ला	व	वा	म	शा	ध	षा
यि	यि	रि	रि	लि	लि	वि	वि	मि	शि	धि	षि
यी	यी	री	री	ली	ली	वी	वी	मी	शी	धी	षी
यु	यु	रु	रु	लु	लु	वु	वु	मु	शु	धु	षु
यु	यू	रु	रू	लु	लू	वु	वू	मु	शू	धु	षू
ये	ये	रे	रे	ले	ले	वे	वे	मे	शे	धे	षे
यै	यै	रै	रै	लै	लै	वै	वै	मै	शै	धै	षै
यो	यो	रो	रो	लो	लो	वो	वो	मो	शो	धो	षो
यौ	यौ	रौ	रौ	लौ	लौ	वौ	वौ	मौ	शौ	धौ	षौ
यं	यं	रं	रं	लं	लं	वं	वं	मं	शं	धं	षं
यः	यः	रः	रः	लः	लः	वः	वः	मः	शः	धः	षः
०	१	३	४	५	६	७	८	९	००		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10		

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

भ	स	फ	ह	म	क्ष	र	त्र	ल	ज्ञ	म्	श्र
भ	सा	फ	हा	म	क्षा	र	त्रा	ल	ज्ञा	म्	श्रा
भि	सि	फि	हि	मि	क्षि	रि	त्रि	लि	ज्ञि	मि	श्रि
भी	सी	फी	ही	मी	क्षी	री	त्री	ली	ज्ञी	मी	श्री
भु	सु	फु	हु	मु	क्षु	रु	त्रु	लु	ज्ञु	मु	श्रु
भु	सू	फू	हू	मू	क्षू	रू	त्रू	लू	ज्ञू	मू	श्रू
भे	से	फे	हे	मे	क्षे	रे	त्रे	ले	ज्ञे	मे	श्रे
भै	सै	फै	है	मै	क्षै	रै	त्रै	लै	ज्ञै	मै	श्रै
भो	सो	फो	हो	मो	क्षो	रो	त्रो	लो	ज्ञो	मो	श्रो
भौ	सौ	फौ	हौ	मौ	क्षौ	रौ	त्रौ	लौ	ज्ञौ	मौ	श्रौ
भं	सं	फं	हं	मं	क्षं	रं	त्रं	लं	ज्ञं	मं	श्रं
भः	सः	फः	हः	मः	क्षः	रः	त्रः	लः	ज्ञः	मः	श्रः

००	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100	

व्यंजनों का मेल

५०-एक, पाठ - एक

ध + र = धर	घर	र + घ = रघ	रथ	क + ङ = कङ	कह
ढ + ल = ढल	फल	र + न = रन	रन	भ + म = भम	सच
क + र = कर	कर	प + न = पन	खन	ङ + ल = ङल	हल
झ + ध = झध	जप	उ + र = उर	डर	झ + ल = झल	जल
ण + ल = णल	गल	न + ल = नल	नल	ठ + र = ठर	भर
श्र + च = श्रच	अब	ण + न = णन	धन	झ + ण = झण	जग
क + ल = कल	कल	ट + च = टच	टब	म + प = माप	चख

भ + ट + र = भटर	मटर	भ + ट + र = भटर	मटर
च + उ + प = चउप	बतख	भ + ङ + ल = भङल	महल
भ + भ + य = भभय	समय	न + ङ + र = नङर	नहर
ङ + व + न = ङवन	हवन	ण + र + भ = णरभ	गरम
ध + व + न = धवन	पवन	ड + ण + र = डणर	इधर
ध + क + उ = धकु	पकड़	झ + न + क = झनक	ऐनक
श्र + भ + र = श्रभर	अमर	प + न + न = पनन	खनन
उ + ण + र = उणर	उधर	च + ङ + ल = चङल	बदल
ज + र + उ = जरउ	औरत	क + भ + र + उ = कभरु	कसरत
क + ल + म = कलम	कलश	च + र + ण + ङ = चरण	बरगद
क + म + ल = कमल	कमल	भ + ल + भ + ल = भलभल	मलमल
क + ल + भ = कलभ	कलम	म + ल + ण + भ = मलणभ	शलगम

ढल माप = फल चख।
 उर भउ = डर मत।
 भरभट मल = सरपट चल।

भम कङ = सच कह।
 झल ठर = जल भर।
 कभरु कर = कसरत कर।

५०-है, पाठ - दो

सु (-) आ (ऽ) मात्रा का व्यंजनों के साथ प्रयोग

क + ँ = क	का	म + ँ = म	चा	प + ँ = प	खा
उ + ँ = उ	ता	न + ँ = न	ना	र + ँ = र	जा
ल + ँ = ल	ला	म + ँ = म	दा	च + ँ = च	बा

उ + ल = उल	ताला	क + उ = कउ	छाता
भ + ल = भल	माला	च + र = चर	बाजा
प + न = पन	खाना	भ + उ = भउ	माता
भ + भ = भभ	मामा	न + न = नन	नाना
म + म = मम	दादा	उ + य = उय	ताया
म + म = मम	चाचा	क + क = कक	काका

गरुड सुय = राजा आया।
 भल लय = माला लाया।
 चर चर = बाजा बजा।
 मम गय = चाचा गया।

चरुड र = बाजार जा।
 सुभ ल = आम ला।
 कक गय = काका गया।
 गरुड सुय = राजा आया।

रुभ गन ग	=	राम गाना गा।
कउ भष ल	=	छाता साथ ला।
रुभ रुग र	=	राम भाग जा।
चरुड र उल लण	=	बाहर जा, ताला लगा।
नन उल लय	=	नाना ताला लाया।
पन प	=	खाना खा।
कक चरुड चरुड	=	काका बाजा बजा।
एक ल प	=	एक फल खा।

५०- डीन, पाठ - तीन

ड (f) इ (f) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

क + ड = कि	कि	कि + र + ल = किरल	किरण	न + ड + च = निच	निब
प + ड = पि	पि	पि + र + ल = पिरल	हिरण	प + ड + न = पिन	पिन

मिन = दिन	मिल = दिल	किम = किस	गिर = गिर
डिल = तिल	भिल = मिल	रिल = ज़िद	फिर = फिर
डिधि = तिथि	विधि = विधि	मिय = दिया	पिड = पिता
गिरल = गिटार	भियर = सियार	किडच = किताब	मिडिय = चिड़िया

विमल रू = विमल जा।	भिडर रू = सितार बजा।
मिन भं रू = दिन में जा।	मिय रू = दिया जला।
रिल भड कर = ज़िद मत कर।	मिल भिल गय = दिल मिल गया।

मिल लण कर भर	= दिल लगा कर पढ़।
मिडिय मन प	= चिड़िया दाना खा।
पिड क कणन भन	= पिता का कहना मान।
किडच उठ कर ल	= किताब उठा कर ला।
हिरल पभ पड घ	= हिरण घास खाता था।
नारियल ल कर डणर गप	= नारियल ला कर इधर रख।
विमल किमभिम प	= विमल किशमिश खा।
अपन मिल भठ गप कर	= अपना दिल साफ रखा कर।
भडकिल पर चरल रू	= साइकिल पर बाज़ार जा।
भिडर रू कर ग	= सितार बजा कर गा।
लडक मिल्लय	= लड़का चिल्लाया।
मिन निकल मुय	= दिन निकल आया।

५०-मर, पाठ - चार

रं (ी) ई (ी) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

की	=	की	उी	=	डी	ठी	=	भी
खुी	=	घड़ी	वीर	=	वीर	नील	=	नील
भीन	=	मीन	नीर	=	नीर	ठील	=	भील
चकरी	=	बकरी	ककरी	=	ककड़ी	भषी	=	साथी
भीड	=	सीता	ग्रील	=	झील	पीर	=	खीर
भरुगी	=	मदारी	पनी	=	पानी	मीडल	=	शीतल
अच्छी	=	अच्छी	मुलभी	=	आलसी	हषी	=	हाथी

भीड मुं	=	सीता आई।
अच्छी भी पीर चनं	=	अच्छी सी खीर बनाई।
मीडल पनी ठर	=	शीतल पानी भर।
चकरी हरी हरी खभ प गं	=	बकरी हरी हरी घास खा गई।
ग्रील पर भड र	=	झील पर मत जा।
भरुगी मुय उभम गिपय	=	मदारी आया, तमाशा दिखाया।
हषी मुय रंगल मे लकड़ी लाय	=	हाथी आया, जंगल से लकड़ी लाया।
मील अपनी वीणा चर	=	शीला अपनी वीणा बजा।
पर की पिपुकी भड कर	=	घर की खिड़की साफ कर।
रनी मगपी मलडी घी	=	रानी चरखी चलाती थी।
गय हरी पीली उष कली घी	=	गाय हरी, पीली तथा काली थी।
हषी पर मरु	=	हाथी पर चढ़।
पनी मीडल है	=	पानी शीतल है।

५०-५०, पाठ - पांच

उ(१) उ(७) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

क	कु	य	यु	च	बु	ल	लु	
कुरी	=	छुरी	भुर	=	पुत्र	भुरगी	=	पुजारी
कुभ	=	तुम	गुलच	=	गुलाब	भुकुट	=	मुकुट
गुड	=	गुड	रुपय	=	रुपया	गुड	=	गुरु
भुचर	=	सुबह	भुप	=	मुख	मुन	=	चुन
मुकन	=	दुकान	गुल	=	गुण	भुल	=	पुल
भुल	=	पुल	चुलचुल	=	बुलबुल	इलभी	=	तुलसी
चुन	=	बुन				गुडिया	=	गुड़िया

भुचर भुचर उ० = सुबह सुबह उठ।
 भुरगी भुय = पुजारी आया।
 मुकन भुर = दुकान पर जा।

भुकुट ल = मुकुट ला।
 गुड प = गुड़ खा।
 भुल भुर भउ मर = पुल पर मत चढ़।

इलभी की भल लय = तुलसी की माला लाया।
 इलन कुर कुर करत भुय = इंजन छुक-छुक करता आया।
 कुरी पर पर लग = छुरी पर धार लगा।
 भुर भुय रुपय लय = पुत्र आया रुपया लाया।
 लडकी भुल भुर पडती घी = लड़की पुल पर खड़ी थी।
 चुल चुल भुर गन भुन = बुल बुल मधुर गाना सुना।
 ललल कपड चुन रग घ = जुलाहा कपड़ा बुन रहा था।
 गुडिया कुरभी भुर गप = गुड़िया कुरसी पर रखा।
 भुभ भउ पिड की भव करत घ = सुदामा माता पिता की सेवा करता था।

५०-कः, पाठ - छः

उ (१) ऊ (२) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

क	=	कू	द	=	फू	र	=	जू
म	=	चू	म	=	दू	प	=	धू
दल	=	फूल	मल	=	झूला	रुड	=	जूता
कक	=	कूक	मड	=	चूहा	पप	=	धूप
पूर	=	पूजा	कड	=	कूड़ा	ऊन	=	ऊन
भूली	=	मूली	काप	=	भूखा	पल	=	धूल
नूर	=	नूर	गर	=	राजू	मण	=	दूध

पूर कर = पूजा कर।
पप ल = धूप ला।

दल मर = फूल चढ़ा।
रभू उ० = रामू उठ।

कल सुय नम मिषय	= भालू आया नाच दिखाया।
मड फनि कड ष	= चूहा हानि करता था।
चलक काप रड गय	= बालक भूखा रह गया।
भीड मल मलडी रड गं	= सीता झूला झूलती रह गई।
मकनमर उरर पर सुल गप	= दुकानदार तराजू पर आलू रख।
भूर निकल	= सूरज निकला।
नरकर पूर ५० कर	= नहाकर पूजा पाठ कर।
रभू नमड कड ष	= रामू नाचता कूदता था।
पल भड उड	= धूल मत उड़ा।
मण उचल	= दूध उबाल।
उरर भड प	= तरबूज मत खा।

५०- भउ, पाठ - सात

र(५) ऋ(८) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

कृ	=	कृ	उ	=	तृ	ए	=	धृ
भृ	=	मृ	वृ	=	वृ	ऋषि	=	ऋषि
कृप	=	कृपा	वृक्ष	=	वृक्ष	कृषि	=	कृषि
नृप	=	नृप	मृग	=	मृग	ऋतु	=	ऋतु
घृत	=	घृत	तृण	=	तृण	मृत्यु	=	मृत्यु

दुःखी पर कृपा कर	=	दुःखी पर कृपा कर।
मृग भागता है।	=	मृग भागता है।
वृक्ष लगे हैं।	=	वृक्ष लगे हैं।
ऋषि तप करता है।	=	ऋषि तप करता है।
गाय का घृत अमृत है।	=	गाय का घृत अमृत है।
ऋषि मृग को पालते हैं।	=	ऋषि मृग को पालते हैं।
एक ऋषि था।	=	एक ऋषि था।
उन का एक मृग था।	=	उन का एक मृग था।
मृग तृण खाता है।	=	मृग तृण खाता है।
एक दिन एक नृप आया।	=	एक दिन एक नृप आया।
मृग डर गया।	=	मृग डर गया।
वह ऋषि की ओर भागा।	=	वह ऋषि की ओर भागा।
नृप ! मृग पर कृपा करें।	=	नृप ! मृग पर कृपा करें।
यह आश्रम का मृग है।	=	यह आश्रम का मृग है।

५०-शु०, पाठ - आठ

N (-) ए (ः) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

क	=	के	च	=	बे	पि	=	खे
म	=	शे	ल	=	णे	च	=	बेटा
भे	=	मेड़	भु	=	पेड़	न	=	ठेला
म	=	शेर	पि	=	खेल	न	=	नेता
ठ	=	भेड़	च	=	बेल	ग	=	गणेश
भ	=	सेब	पि	=	खेत	र	=	राजेश
र	=	रेल	भ	=	मेला	क	=	कमलेश

कभलम मप रूम क पि	=	कमलेश देख जादू का खेल।
नमी किनारे भु नी भु	=	नदी किनारे पेड़ ही पेड़।
मिनम मर भु कर	=	दिनेश देर मत कर।
न ल र उ ठ	=	ठेला ला, रेत भर।
उर मल	=	तेज चल।
रलेरी पि	=	जलेबी खा।
गलम की पूरा कर	=	गणेश की पूजा कर।
च भन उ कर	=	बेटा मेहनत कर।
रलगड़ी सुं	=	रेलगाड़ी आई।
गप गड़ी भर मर गं	=	रेखा गाड़ी पर चढ़ गई।
मर मप कर ठ उर गय	=	शेर देख कर भेड़ डर गया।
भी ० भ च ले कर सु	=	मीठे सेब ले कर आ।
मिडिया भु म उर गं	=	चिड़िया पेड़ से उड़ गई।

५०-नव, पाठ - नौ

र (=) ऐ (ॐ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

कै	=	कै	पै	=	पै	थै
चै	=	बै	लै	=	लै	सैर
चैल	=	बैल	भैल	=	मैला	पैसा
पैर	=	पैर	थैल	=	थैला	पैदल
भैना	=	मैना	भैया	=	भैया	सैनिक
गैया	=	गैया	तैरना	=	तैरना	बैठना

मैलैष सु	=	शैलैष आ।
भैर पर मल	=	सैर पर चला।
कैलाश मे थैल ल	=	कैलाश से थैला ला।
पैसा कमा	=	पैसा कमा।
बैल मे बच	=	बैल से बचा।
तैरना सीख	=	तैरना सीखा।
सैनिक देश का रक्षक है	=	सैनिक देश का रक्षक है।
बैठ कर अखबार पढ़	=	बैठ कर अखबार पढ़।
भैया बैलगाड़ी ले जा	=	भैया बैलगाड़ी ले जा।
थैला मैला मत कर	=	थैला मैला मत कर।
भैय्या ऐनक लगा कर,	=	भैय्या ऐनक लगा कर,
थैला लेकर बाजार जाता है।	=	थैला लेकर बाजार जाता है।
बाजार से पैदल घर आता है।	=	बाजार से पैदल घर आता है।
अपने पैर साफ-सुथरे रखता है।	=	अपने पैर साफ-सुथरे रखता है।

५०-रुम, पाठ - दस

ज () ओ () का व्यंजनों के साथ प्रयोग

कै	=	को	भै	=	मो	पै	=	खो
ऊँ	=	तो	रै	=	रो	थै	=	घोड़ा
मैर	=	शोर	चैल	=	बोतल	भैर	=	मोटर
भैर	=	मोर	ऊँ	=	तोता	लैभड़ी	=	लोमड़ी
गैल	=	गोल	ऊँ	=	डोर	टैकरी	=	टोकरी
कैट	=	कोट	ऊँ	=	तोप	जपनी	=	ओखली
थै	=	घोड़ा	लै	=	लोटा	भैर	=	मोहन
गैठी	=	गोभी	रैलक	=	ढोलक	भैर	=	सोहन

गैल थै पर चै

भैर कै पन

मैर भउ कर

भैर नम गूँ

थै चैर रै

कैल की भीठी चैली भन

रैलक की तल पर नम

टैकरी भिर पर गप

भैर नमउ

थैर ठगउ

भैर मुभी ठगउ

ऊँ लपउ

= गोपाल घोड़े पर बैठा।

= मोहन कोट पहना।

= शोर मत कर।

= मोर नाच रहा है।

= घोड़ा बोझा ढोता है।

= कोयल की मीठी बोली सुन।

= ढोलक की ताल पर नाचा।

= टोकरा सिर पर रख।

= मोर नाचता है।

= घोड़ा भागता है।

= मोटा आदमी भागता है।

= तोता फल खाता है।

५०-ज्यङ्, पाठ - ग्यारह

ज्यङ् (ञ) औ (ौ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

कौ	=	कौ	हौ	भौ	=	सौ
चौ	=	चौ	दौ	गौ	=	गौ
नौ	=	नौ	मौ	बौ	=	बौ
पौ	=	पौ	गौरी	खिलौना	=	खिलौना
दौड़ा	=	दौड़ा	रौनक	बिछौना	=	बिछौना
पौधा	=	पौधा	दौलत	बौना	=	बौना
मौसी	=	मौसी	नौकर	मौसम	=	मौसम

चैन सुय है	=	बौना आया है।
भौभी सुगं	=	मौसी आई।
पकौड़े ज्यङ् कचौड़ी लंग	=	पकौड़े और कचौड़ी लाई।
दौड़ कर रू	=	दौड़ कर जा।
बिछौना चिक्क	=	बिछौना बिछा।
मौसम अच्छा है	=	मौसम अच्छा है।
कौआ काला हैउ है	=	कौआ काला होता है।
औरत कपड़े धोती है	=	औरत कपड़े धोती है।
नौका तैरती है	=	नौका तैरती है।
मौका देख कर बात कर।	=	मौका देख कर बात कर।
लड़का दौड़ता है।	=	लड़का दौड़ता है।
वह कौन आया है।	=	वह कौन आया है।

५०- चण्ड, पाठ - बारह

श्रं (ँ) अं (ँ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

श्रं	=	अं	रं	=	रं	मं	=	शं
कं	=	कं	रं	=	जं	ढं	=	फं
कं०	=	कंठ	रंभ	=	हंस	मंम	=	चांद
रंग	=	रंग	भउंग	=	पतंग	ऊंट	=	ऊंट
भंग	=	संग	रंभउ	=	बसंत	कंम	=	कांच
भाप	=	पंख	भंगल	=	मंगल	श्रंगप	=	आंख
माप	=	शंख	मंमन	=	चंदन	श्रंगुर	=	अंगूर
उंग	=	तंग	रंउ	=	झंडा	लंगुर	=	लंगूर
रंग	=	ढंग	रंमर	=	बंदर	भंमिर	=	मंदिर

कौए क रंग काला है	=	कौए का रंग काला है।
तोते क कं० नीला है	=	तोते का कंठ नीला है।
गंगा में पानी है॥	=	गंगा में पानी है॥
मोर क पंख ला।	=	मोर का पंख ला।
मंदिर में शंख बज रहा है।	=	मंदिर में शंख बज रहा है।
बसंत ऋतु आ गई।	=	बसंत ऋतु आ गई।
हमारा झंडा तिरंगा है।	=	हमारा झंडा तिरंगा है।
चंदन मंदिर में जा।	=	चंदन मंदिर में जा।
लंगूर अंगूर खा रहा है।	=	लंगूर अंगूर खा रहा है।
ऊंट कुएं के पास बैठा है।	=	ऊंट कुएं के पास बैठा है।
अंगूर मीठे होते हैं।	=	अंगूर मीठे होते हैं।

५० - ड़, पाठ - तेरह

अः (:) अः (:) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

कः	=	छः	नः	=	नः	ठः	=	भः
मः	=	दुः	भः	=	मः	मनैः	=	शनैः
भूतः	=	प्रातः	नरः	=	नरः	भूयः	=	प्रायः
मःप	=	दुःख	नभः	=	नमः	भ्वः	=	स्वः
कवः	=	भुवः	कलतः	=	फलतः			

रनै भूतः कः चर उन्डी है = रानो प्रातः छः बजे उठती है।
 वर भव क सुमर करडी है = वह सब का आदर करती है।
 भूतः कल भुग्न निकलने = प्रातः काल सूरज निकलने
 मे भुलने उन्न मफिये = से पहले उठना चाहिये।
 भूतः भैर के की रान मफिये = प्रातः सैर को भी जाना चाहिये।
 किभी के मःप भउ मे = किसी को दुःख मत दो।
 रभ के कः चरन कं है = राम के छः बहन भाई हैं।
 मःप मे भुम भउ कौते = दुःख में साहस मत छोड़ो।
 भूतः चरें क पैर काउ = प्रातः बड़ों के पैर छुओ।
 कः चर गये = छः बज गये।
 भूतः उ० = प्रातः उठ।
 पुनः नह = पुनः नहा।
 रभु मे मनैः मनैः मलै = रास्ते में शनैः शनैः चलो।

शारदा लिपि शारदादेश (कश्मीर) की संस्कृति का चिह्न है।

इस की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है

शारदा पढ़िये
और
अपने बच्चों को पढ़ने
की ओर प्रेरित करें।

प्रकाशक

पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

अजीत कालोनी, जम्मू

Contact No. : 0191-2555607

E-mail : punchang.vijayshwar@yahoo.com



पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

अजीत कालोनी, जम्मू

Contact No. : 0191-2555607, 09419133233

Email : punchang.vijayshwar@yahoo.com